

8/8/19

पत्रावली पेरा 28] वकील इन पक्ष उपस्थित।  
 वकील इन पक्ष उपस्थित। प्रार्थना-पत्र क्रमांक  
 आदेश 41 निम्न 19 सप्रेमि द्वारा ISI CPC पर इन  
 पक्ष की वकालत हुनी गर्ब। वकील प्रार्थी (अपीलांत) का  
 तर्क है कि सुनवाई के दिवस अपीलान्त के वकील  
 श्री हरिराम उपस्थित नहीं हो सके क्योंकि इन्होंने  
 इस समय वकालत की प्रोविडेंस छोड़ दी थी।  
 अपीलान्त को यह भी क्लर है कि उनके हाथीवम  
 में उन्हें एक वाक्य जोड़ (पूरा) है। एडवोकेट श्री जी।  
 वाणी समय तक इनसे संपर्क नहीं हुआ। अपीलान्त  
 इनका एवं ग्राहीवा वकालत है जो अनजित भी है।  
 इसी दौरान वकीलों की लम्बी हस्तगत भी पल्टी  
 उपस्थित प्रमाण वकालत के बावजूद भी इनके इतिहास  
 के संपर्क नहीं हो पाया। फलतः सैप्रेमि पक्ष द्वारा  
 जाच्यती ही जाने पर यह आवेदन पेरा क्रिया लिहा  
 उपरोक्त प्रार्थना-पत्र पर समस्त परिस्थितियों के मद्देनजर  
 न्यायाधिकार निर्णय करते हुए आवेदन स्वीकार किया जावे।



वकील अज्ञात (रिप्लाइड) की इलीम है  
 कि अपीलान्त स्वयं विजिलेंट नहीं रहा और वाणी  
 अरुते पश्चात् यह आवेदन क्रिया है जो निश्चिन्ता रूप से  
 सिंपल वहा है और विलम्ब के लिए सप्रेमि  
 वाक्य भी नहीं है। केवल हाथीवम की चूक  
 को आधार बनाया पेरा आवेदन निर्णय के  
 द्वारा के लिए उपस्थित नहीं है। उद्योगे निम्नलिखित  
 न्यायाधिकार दस्तावेज पेरा क्रिया - (i) RBT 2005 (12)  
 Page 132 (ii) RRT 2017 (1) Page 71 (iii) RRT  
 2015 (1) Page 232।

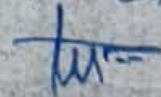
*[Signature]*

P.T.O

आतः प्राची (अपीलार्) के आदेश खारिज आमादा रहे।

इस पक्ष की कदम एवं नर्तों पर  
मनन किया। अपीलार् के आदेशों द्वारा अपनी  
भूल के लिए अपीलार् को खारिज नहीं हुआ  
परे इसलिए अपीलार् प्राची द्वारा वकील पालीश्रीतों  
पर और वकील के पश्चात् यह निष्कर्ष है कि  
अपील अपीलार् कदम की स्टेज पर भी और  
इसका निराकरण तकनीकी कारणों पर न होकर  
जुदावगुण पर होने वह जफात उपयुक्त एवं  
न्यायोचित होगा। प्राची (अपीलार्) के प्राची-  
पत्र स्वीकार कर भूल अपील पत्रावली पुनः  
बराबर का सुनवाई के निर्दिष्ट प्रकार में  
रखी जाने के आदेश दिये जाते हैं।

पत्रावली प्रेषित हुआ होकर नंबर 4  
कर है। काउन्सिल दाखिल दाखला है।



राजस्व अपील प्राधिकारी  
बाडमेर

